❋ 25 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] मीठे बच्चे– देह-अभिमान आसुरी कैरेक्टर है, उसे बदल दैवी कैरेक्टर्स धारण करो तो रावण की जेल से छूट जायेंगे।

2] हर एक अपने पापों की सज़ा एक तो गर्भ जेल में भोगते हैं, दूसरा रावण की जेल में अनेक प्रकार के दु:ख उठाते हैं। बाबा आया है तुम बच्चों को इन जेलों से छुड़ाने। इनसे बचने के लिए सिविलाइज्ड़ बनो।

3] बाप ही आकर रावण की जेल से छुड़ाते हैं क्योंकि सब क्रिमिनल, पाप आत्मायें हैं। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र किमिनल होने के कारण रावण की जेल में हैं। फिर जब शरीर छोड़ते हैं तो गर्भ जेल में जाते हैं। बाप आकर दोनों जेल से छुड़ाते हैं फिर तुम आधाकल्प रावण की जेल में भी नहीं और गर्भ जेल में भी नहीं जायेंगे। तुम जानते हो बाप धीरे-धीरे पुरूषार्थ अनुसार हमें रावण की जेल से और गर्भ जेल से छुड़ाते हैं। बाप बताते हैं तुम सब क्रिमिनल हो रावण राज्य में। फिर राम राज्य में सब सिविलाइज्ड़ होते हैं। कोई भी भूत की प्रवेशता नहीं होती है। देह का अहंकार आने से ही फिर और भूतों की प्रवेशता होती है।

4] दिखाते हैं देवता वाम मार्ग में कैसे जाते हैं। पहली-पहली क्रिमिनलिटी है ही यह। काम चिता पर चढ़ते हैं, फिर रंग बदलते-बदलते बिल्कुल काले हो जाते हैं। पहले-पहले गोल्डन एज में हैं सम्पूर्ण गोरे, फिर दो कला कम हो जाती हैं। त्रेता को स्वर्ग नहीं कहेंगे, वह है सेमी स्वर्ग। बाप ने समझाया है रावण के आने से ही तुम्हारे ऊपर कट चढ़ना शुरू हुई है। पूरे क्रिमिनल अन्त में बनते हो। अभी 100 वाइसलेस थे फिर 100 परसेन्ट विशश बने।

5] जब द्वापर में रावण राज्य होता है तो 5 विकार रूपी रावण सर्वव्यापी हो जाता है। जहाँ विकार सर्वव्यापी है वहाँ बाप सर्वव्यापी कैसे हो सकता है।

6] तुम बच्चे श्रीमत पर विश्व में शान्ति स्थापन करने के निमित्त बने हो। एक बाप के सिवाए और कोई की मत ऊंच ते ऊंच हो नहीं सकती। ऊंच ते ऊंच मत है ही भगवान् की। जिससे मर्तबा भी किता ऊंचा मिलता है।

7] बाप समझाते हैं काम महाशत्रु है, इनको जीतने के लिए कितना माथा मारते हैं। मूल बात है ही पवित्रता की। इस परही कितने झगड़े होते हैं। बाप कहते हैं यह काम महाशत्रु है, इन पर जीत पहतो तब ही जगत जी बनेंगे। देवतायें सम्पूर्ण निर्विकारी हैं ना। आगे चल समझ ही जायेंगे। स्थापना हो ही जायेगी।

8] श्रेष्ठ स्थिति से श्रेष्ठ वायुमण्डल स्वत: बनता है जो अनेक आत्माओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। जहाँ भी आप आत्मायें योग में रहकर कर्म करती हो वहाँ का वातावरण, वायुमण्डल औरों को भी सहयोग देता है। ऐसी सहयोगी आत्मायें बाप को और विश्व को प्रिय हो जाती हैं।

9] अचल स्थिति के आसन पर बैठने से ही राज्य का सिंहासन मिलेगा।

❋ योग-

1] शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे।

2] बाप कहते हैं मैं पतित-पावन हूँ, मुझे याद करने से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे।

3] अच्छी रीति याद में रहेंगे, देह-अभिमानी नहीं होगा तो भाषण अच्छा करेंगे।

4] योग का अर्थ है श्रेष्ठ स्मृति में रहना। मैं श्रेष्ठ आत्मा श्रेष्ठ बाप की सन्तान हूँ, जब ऐसी स्मृति रहती है तो स्थिति श्रेष्ठ हो जाती है।

...2

❁ 25 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

❁ धारणा-

1] अब तुम बच्चों को पुरूषार्थ कर देही-अभिमानी बनना है। जब ऐसे (लक्ष्मी-नारायण) बन जायेंगे तब ही देवता कहलायेंगे। अभी तो तुम ब्राह्मण कहलाते हो।

2] बाप समझाते हैं अब पुरूषार्थ कर अपना दैवी कैरेक्टर्स बनाना है, तब ही आसुरी कैरेक्टर्स से छूटते जायेंगे। आसुरी कैरेक्टर्स में देह-अभिमान है नम्बरवन। देही-अभिमानी के कैरेक्टर्स कभी बिगड़ते नहीं है। सारा मदार कैरेक्टर्स पर है।

3] कहते रहते हैं– बच्चे, देही-अभिमानी भव। कोई विकार न रहे, अन्दर में कोई शैतानी न रहे। तुम्हें किसको भी दु:ख नहीं देना है, किसकी निंदा नहीं करनी है। तुम बच्चों को कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

4] उल्टी-सुल्टी बातें सुनाकर दिल को खराब कर देते हैं इसलिए कभी भी झूठी बातें सुनकर अन्दर में जलना नहीं चाहिए। पूछो फलाने ने मेरे लिए ऐसे कहा है? अन्दर सफाई होनी चाहिए। कई बच्चे सुनी-सुनाई बातों पर भी आपस में दुश्मनी रख देते हैं। बाप मिला है तो बाप से पूछना चाहिए ना।

5] बाप तो आये हैं सबको ऊंच बनाने। प्यार से उठाते रहते हैं। ईश्वरीय मत लेनी चाहिए। निश्चय ही नही होगा तो पूछेंगे ही नहीं तो रेसपान्ड भी नहीं मिलेगा। बाप जो समझाते हैं उसको धारण करना चाहिए।

6] बाप कहते हैं **अपना कल्याण कर ऊंच पद पाओ, महारथी बनो।** पढ़ेंगे ही नहीं तो क्या पद पायेंगे।

❁ सेवा-

1] जितना-जितना तुम सर्विस में लगें रहेंगे। उतना देह-अभिमान होता जायेगा। सर्विस करने सेही देह-अभिमान कम होगा। देही-अभिमानी बड़ी-बड़ी सर्विस करेंगे। बाबा देही-अभिमानी है तो कितनी अच्छी सर्विस करते हैं।

2] **बच्चे, ऐसे-ऐसे समझाओ।** इतने अपरमअपार दु:ख क्यों हुए हैं? पहले तो अपरमअपार सुख थे जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। यह सर्वगुण सम्पन्न थे, अब यह नॉलेज है ही नर से नारायण बनने की। पढ़ाई है, इनसे दैवी कैरेक्टर्स बनते हैं। इस समय रावण के राज्य में सभी के कैरेक्टर्स बिगड़े हुए हैं। सबके कैरेक्टर्स सुधारने वाला तो एक ही राम है। इस समय कितने धर्म हैं, मनुष्यों की कितनी वृद्धि होती रहती है, ऐसे ही वृद्धि होती रहेगी तो फिर खाना भी कहाँ से मिलेगा ! सतयुग में तो ऐसी बातें होती नहीं हैं। वहाँ दु:ख की कोई बात ही नहीं। यह कलियुग है दु:खधाम, सब विकारी हैं। वह हैै सुखधाम, सभी सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। **घड़ी-घड़ी उन्हों को यह बतलाना चाहिए तो कुछ समझ जाएं।**